'पाटलिपुत्र राष्ट्रीय युवा संसद के समापन–समारोह के अवसर पर राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक–12.06.2017, समय–पूर्वा॰ 10.00 बजे, स्थान–ज्ञान भवन, पटना)

केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री रामकृपाल यादव जी, पाटलिपुत्र राष्ट्रीय युवा संसद के संस्थापक श्री शायण कुणाल जी, अध्यक्ष श्री अभिनव झा जी, उपाध्यक्ष श्री निर्भय भारद्वाज जी, इंडिया फाऊण्डेशन के श्री गुरू प्रकाश जी, एल॰आई॰सी॰ के जोनल मैनेजर श्री सी॰ विकास राव जी, चाणक्या पॉलिसी फाऊण्डेशन के संस्थापक श्री मणिभूषण झा जी, 'WHIP' के श्री कुमार शानू जी, 'युवा संसद' में पधारे युवागण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

'पाटलिपुत्र राष्ट्रीय युवा संसद' के समापन–समारोह में आकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। आपने दो दिनों तक बिहार की राजधानी पटना, जिसे कभी पाटलिपुत्र भी कहा जाता था, में 'युवा संसद' आयोजित किया। इस संसद के विभिन्न सत्रों में आपने युवा–हितों की विभिन्न बातों पर पूरी गहराई से विचार किया होगा। वैश्विक परिदृश्य में युवाओं के दायित्वों पर विचार करते हुए आपने भारतीय और प्रान्तीय परिवेश में भी युवाओं के कर्त्तव्यों और उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका पर विचार किया होगा।

प्यारे मित्रों, आप इस देश ही नहीं पूरी दुनियाँ की तकदीर हो। संचार–क्रांति के इस युग में, जबकि क्षण भर में सूचनाओं का आदान–प्रदान विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक हो जा रहा है और पूरी दुनियाँ को जिसे आज एक 'विश्वग्राम' (Global Village) की संज्ञा दी जा रही है, में अगर मैं आपको केवल 'भारत भाग्य विधाता' नहीं कहकर 'विश्व भाग्य विधाता' कहूँ, तो क्या गलत होगा? भारत 'विश्व गुरू' रहा है। और आज भी पूरी दुनियाँ हमारी ओर एक

नई आशा, एक नये विश्वास और एक नयी सोच के साथ देख रही है। आतंकवाद फलता–फूलता जा रहा है। 'पूंजीवाद' और 'बाजारवाद' ने 'भौतिकतावाद' को इस तरह जगा रखा है कि मनुष्य की अस्मिता ही संकटग्रस्त दीखती है। 'मानवता' ही नहीं बचेगी, मनुष्य के सपने ही नहीं बचेंगे, तो दुनियाँ के सँवरने की उम्मीद कैसे की जाये? आपने पंजाब के मशहूर कवि अवतार सिंह संधू 'पाश' का नाम जरूर सुना होगा। उनकी एक कविता की पंक्ति है–

''सबसे खतरनाक होता है

हमारे सपनों का मर जाना।''

–सपनों का जिन्दा रहना इंसानी जिन्दगी के लिए बेहद जरूरी है। हमारे सपने अगर सो जायें, तो हमारी जिन्दगी सो जायेगी। कहते हैं– सपने अपने नहीं होते। मगर मैं सोचता हूँ कि –सपने अपने हो सकते हैं, तब जब उन्हें पूरा करने के लिए आदमी जिद्द पकड़ ले, दृढ़संकल्पित हो जाए। आप सभी युवा हैं, अपने सपने को साकार करने की जिद्द आपमें पैदा हो सकती है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ॰ कलाम साहब भी कहा करते थे कि –''सपने वो नहीं हैं, जो हम सोये में देखा करते हैं, सपने तो वे हैं, जो हमें सोने ही नहीं देते।'' कितनी प्रेरणादायी हैं ये पंक्तियाँ! सच है, आदमी जब अपने सपनों को साकार करने की मन में ठान लेता है, तो हर तरह की बाधाएँ स्वतः दूर हो जाती हैं। आप तो युवा हैं। युवा अवस्था वह अवस्था होती है, जब व्यक्ति में पूरा उत्साह होता है, वह ऊर्जा से लबरेज होता है, मन में उल्लास होता है और भुजाओं में शक्ति होती है। अगर विवेकपूर्वक रूप से आप राष्ट्र–निर्माण की राह पर निकल पड़े, तो भारतवर्ष पुनः दुनियाँ का सिरमौर बन जाएगा और पूरे विश्व में शांति और सौहार्द की स्थापना भी संभव हो सकेगी।

आप जानते हैं, हमारा भारत आज एक पूर्ण युवा राष्ट्र है। युवा राष्ट्र इस अर्थ में कि यहाँ की 65 प्रतिशत से अधिक की आबादी युवाओं की आबादी है। हम आज अत्यंत गौरवान्वित हैं और आत्मबल से पूरी तरह सम्पन्न भी। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि आज भारतीय युवाओं ने अपने मजबूत कंधों पर राष्ट्रीय निर्माण का दायित्व उठा लिया है। जिस राष्ट्र की सबसे बड़ी ताकत वहाँ की युवा–शक्ति हो, वहाँ की युवा प्रतिभाएँ हों, वह राष्ट्र अपने समग्र और सर्वतोन्मुखी विकास के प्रति आश्वस्त रह सकता है। युवाओं की प्रतिभा और परिश्रम पर हमें गर्व है। आज की युवा–पीढ़ी अपने भविष्य के निर्माण के सिर्फ सपने ही नहीं देखती, उन सपनों को साकार करना भी जानती है।

भारतीय युवाओं के हृदय–सम्राट स्वामी विवेकानन्द जी का कथन है– ''नवयुवकों तुम्हारे ऊपर ही मेरी आशा है। क्या तुम अपने राष्ट्र की पुकार सुनोगे ? यदि तुम्हें मुझपर विश्वास है, तो मैं कहूँगा कि तुममें से प्रत्येक का भविष्य उज्ज्वल है। अपने आप पर अगाध, अटूट विश्वास रखो। चरित्रवान, बुद्धिमान, दूसरों के लिए सर्वस्व त्यागी तथा आज्ञाकारी युवकों पर ही मेरे भविष्य का कार्य निर्भर है। उन्हीं पर मुझे भरोसा है, जो मेरे भावों को जीवन में परिणत कर अपना और देश का कल्याण करने में जीवन–दान कर सकेंगे।''

स्वामी विवेकानन्द भारतीय शिक्षा के संदर्भ में कहते हैं कि –''हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्र–निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरों पर खड़ा होना सीखें।'' स्वामी जी धर्म को भी एक आदर्श मनुष्य के निर्माण का प्रमुख माध्यम मानते हैं। उनके शब्द हैं– ''हमें ऐसे धर्म की आवश्यकता है, जिससे हम मनुष्य बन सकें। हमें ऐसी सर्वांग सम्पन्न शिक्षा चाहिए, जो हमें मनुष्य बना सके।'' एक अच्छा मनुष्य ही एक अच्छा नागरिक बनेगा। वह अगर अच्छा हिन्दू है, तो अच्छा हिन्दू बनेगा, वह अगर

मुस्लिम है तो अच्छा मुस्लिम बनेगा, वह अगर अच्छा इसाई है तो अच्छा इसाई बनेगा । अर्थात् वह जो भी है, जहाँ भी है और जैसा भी है –सब जगह अच्छा ही रहेगा ।

आज ज्ञान–विज्ञान के हर क्षेत्र में युवाओं का प्रवेश है। ज्ञान और तकनीकी विकास के युग में युवाओं को हुनरमंद होना होगा। भारत सरकार की 'प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना', 'मेक इन इंडिया योजना', 'डिजिटल इंडिया योजना' आदि तथा बिहार सरकार की 'सात निश्चय योजना' में युवाओं के कल्याण के लिए कई योजनाएँ संचालित हो रही हैं। आप सबको इनसे लाभान्वित होकर राष्ट्रीय नव–निर्माण में अपना योगदान देना चाहिए।

मैं समझता हूँ, आज भारतीय राजनीति की गतिविधियों में युवाओं को न सिर्फ गहरी दिलचस्पी रखनी चाहिए, बल्कि इसमें आपको सक्रिय भूमिका भी निभानी चाहिए। आप जब अधिक संख्या में विधानमंडलों और संसद के लिए निर्वाचित होंगे, तब आपको अपनी समस्याओं और आवश्यकताओं को ज्यादा संजीदगी से सरकारों के सामने रखने का मौका मिलेगा। भारतीय राजनीति में ऐसे सुशिक्षित और ऊर्जावान नेताओं की निहायत जरूरत है, जो देश के सर्वांगीण विकास को और अधिक गति प्रदान कर सकें। एक बार पुनः आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।